Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.5442, Volume 08, No. 04, October, 2018, pp. 355-357

cSd vkQ bf.M;k dk jkdM+ izcU/k

डॉ. मोरन सिंह*

izLrkouk

बैंक ऑफ इण्डिया का रोकड़ प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसके बगैर किसी भी बैंक या संस्था का संचालन सम्भव नहीं हो सकता क्योंकि रोकड़ बैंक या संस्था के लिये जीवन रक्त की तरह कार्य करता है। रोकड़ प्रबन्ध नकद एवं नकद तुल्य सम्पत्तियों के प्रबन्ध से है। नकद तुल्य सम्पत्तियों में तुरन्त विपण्य प्रतिभूतियों तथा बैंक में जमा धनराशि को सम्मिलित करते हैं। व्यवसाय के सफल संचालन में तरल सम्पत्तियों का महत्वपूर्ण स्थान है। नकद कोषों का व्यवसाय में उतना ही महत्व है जितना कि मानव शरीर में रक्त का। जिस प्रकार रक्त का उचित प्रवाह मानव शरीर को स्वस्थ एवं कार्यशील रखता है। उसी प्रकार नकद कोष व्यवसाय में सभी क्रियाओं को उचित रूप से क्रियान्वित एवं संचालित करता है जो कि एक व्यवसाय के लिये महत्वपूर्ण होता है।

किसी भी बैंक की मूल क्रियाओं का आधार स्तम्भ वित्त माना जाता है। विशेषकर उत्पादन व विपणन सम्बन्धी क्रियाओं में वित्त उसी प्रकार कार्य करता है जो मशीन को चलाने में तेल या मानव शरीर को चलाने में रक्त का होता है। वित्त के अभाव में न तो कोई बैंक स्थापित की जा सकती है और न संचालित व विकसित की जा सकती है। वित्त की आवश्यकता उन क्षेत्रों में भी होती है जहॉ किसी न किसी प्रकार की आर्थिक क्रियायें सम्पन्न होती हैं। आर्थिक क्रिया के बहाव को निर्देशित करने और उसके निर्विघ्न संचालन के लिये कुछ तो होना चाहिये। वित्त ही ऐसा साधन है जो इस कार्य को सम्पन्न कर सकता है। केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार व स्थानीय सरकार वित्त का प्रयोग करती हैं जिसे विभिन्न स्रोतों से प्राप्त किया जाता है और इसका प्रयोग निर्धारित नीतियों एवं विधियों के अनुसार ही होना चाहिये जिसके लिये बैंक ऑफ इण्डिया का विशेष योगदान है।

बैकों के लिये रोकड़ प्रबन्ध का उद्देश्य अनुकूलतम या आदर्श रोकड़ शेष निर्धारित करना है। आदर्श रोकड़ शेष ऐसा शेष होता है जो कि न तो अधिक हो और न अपर्याप्त क्योंकि फालतू रोकड़ अनुत्पादन है तथा रोकड़ की कमी फर्म की तरलता को प्रभावित करती है। फालतू रोकड़ को अल्पकालीन प्रतिभूतियों में निवेश किया जाय जिससे कुछ प्रत्याय तो मिले तथा रोकड़ की कमी अल्पकालीन ऋण लेकर दूर की जाये। अतः रोकड़ प्रबन्ध का सम्बन्ध रोकड मामलों के इस प्रकार प्रबन्धन से है कि फर्म में आवश्यक रोकड़ शेष बनाये रखने की लागत न्यूनतम हो। इसका उद्देश्य तरलता त्यागे बिना लाभदायकता अधिकतम करना है।

रोकड़ बैंक का मूल आधार होता है। बिना पर्याप्त रोकड़ के बैंक को सफलतापूर्वक नहीं चलाया जा सकता। साथ ही रोकड़ एक गैर अर्जन वाली चालू सम्पत्ति होती है। अतः आवश्यकता से अधिक रोकड़ जो कि बैंक में निष्क्रिय पड़ी है तथा जो बैंक की आर्थिक क्रियाओं को सम्पादित नही कर रही है वह रोकड़ बैंक की

* डा. जैड. एच. (पी.जी.) कॉलेज आगरा रोड, एटा

लाभदायकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। रोकड़ किसी भी संस्था में न तो आवश्यकता से कम होनी चाहिये और नही आवश्यकता से अधिक, दोनों ही स्थितियाँ व्यवसाय हेतु हानिप्रद हैं। अतः व्यवसाय में रोकड़ की मात्रा पर्याप्त होनी चाहिये अर्थात व्यवसाय को कुशलतापूर्वक चलाने के लिये यह आवश्यक है कि रोकड़ का प्रबन्ध कुशलतापूर्वक किया जाये। रोकड़ या नकद कोषों में हस्तस्थ रोकड़, बैंक शेष, विपणन योग्य प्रतिभूतियाँ तथा बैंक में सावधि जमा को सम्मिलित किया जाता है। रोकड़ प्रबन्ध के सम्बन्ध में वित्तीय प्रबन्धक का दायित्व न केवल रोकड़ का उचित उपयोग करना है बल्कि उसे रोकड़ की न्यूनतम राशि इस प्रकार निश्चित करनी होती है जिससे संस्था में आवश्यक तरलता रखते हुये अधिकतम लाभ अर्जित किया जा सके।

नकदी का आयोजन व नियंत्रण वित्त कार्य का केन्द्र–बिन्दु है। एक व्यवसायिक वित्त प्रबन्धक को व्यापार की आवश्यकतानुसार उचित मात्रा में नकद कोष रखना सदैव आवश्यक होता है। नकदी का उचित मात्रा में न होना या समय पर उपलब्ध न होना किसी भी फर्म के लिये अकाल मृत्यु का कारण बन सकती है। नकदी के आयोजन का आशय भविष्य के लिये आवश्यक नकदी की मात्रा का पूर्वानुमान लगाना है ताकि भविष्य में किये जाने वाले भुगतानों में कोई समस्या न आये। नकदी के आयोजन में नकदी का नियंत्रण भी सम्मिलित रहता है। नकदी के आयोजन का मुख्य उद्देश्य भविष्य के लिये उस उचित नकदी की मात्रा का निर्धारण करना है जो कि नकदी के बाह्य–प्रवाह एवं अन्तवर्ती प्रवाह के आधार पर ठीक है। नकद–कोषों का निर्धारण केवल नकदी के स्रोतों एवं प्रयोगों के आधार पर हो सकता है। उचित नकदी प्रबन्धन केवल भविष्य की सामान्य आवश्यकताओं के लिये नकदी का प्रबन्ध करना ही नहीं बल्कि भविष्य की आकस्मिकताओं के लिये भी नकदी का प्रबन्ध करना है।

रोकड़ बजट रोकड़ आयोजन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तंत्र है। इसके अन्तर्गत विभिन्न स्रोतों से प्राप्तियों की रकम तथा विभिन्न मदों पर व्यय के रूप में भुगतान की जाने वाली धनराशि को एक विवरण में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें पहले प्राप्तियों तथा बाद में भुगतानों का विश्लेषण दर्शाया जाता है। सभी प्राप्तियों की कुल राशि में से उसी अवधि के कुल व्ययों को घटाकर रोकड़ पूर्वानुमान लगाया जाता है। मॉडलों की सहायता से अनुकूलतम रोकड़ शेष को ज्ञात करके रोकड़ को आयोजित एवं नियंत्रित करता है। रोकड़ बजट के द्वारा व्यापार के लिये नकदी का पूर्वानुमान लगाया जाता है और इसका दूसरा कार्य रोकड़ नियंत्रण के लिये होता है। इसके लिये रोकड़ बजट रिपोर्ट तैयार की जाती है। इस रिपोर्ट का आशय वास्तविक प्राप्ति व भुगतान की तुलना पूर्वानुमान प्राप्ति व भुगतान के साथ करने से है। प्रत्येक बजट अवधि की समाप्ति पर वास्तविक व्ययों एवं बजट राशियों में तुलना की जाती है। यदि तुलना के बाद दोनों में अन्तर आता है तो अन्तर के कारणों का पता लगाया जाता है जिससे भविष्य में उन्हें ध्यान में रखा जा सके।

रोकड़ प्रबन्ध प्रत्येक संस्था के आकार, प्रकार, प्रकृति व क्षेत्र पर निर्भर करता है। रोकड़ की एक निश्चित मात्रा किसी विशिष्ट संस्था के लिये कम हो सकती है, उतनी ही रोकड़ की मात्रा किसी अन्य विशिष्ट संस्था के लिये अधिक हो सकती है वहीं यही समान रोकड़ की मात्रा किसी अन्य संस्था के लिये पर्याप्त एवं अनुकूलतम हो सकती है। प्रत्येक संस्था के लिये अनुकूलतम रोकड़ प्रबन्ध ही सर्वश्रेष्ठ रोकड़ का स्तर माना जाता है। अनुकूलतम रोकड प्रबन्ध को अनुकूलतम पूँजीकरण या उचित पूँजीकरण भी कहते हैं जब कम्पनी या संस्था विनियोजित पूँजी पर सामान्य रूप से आय अर्जित करती है तथा वह समता अंशों पर उचित लाभांश देती है जिससे समता अंशों का बाजार मूल्य सामान्य रहता है तो ऐसी स्थिति में अनुकूलतम रोकड़ प्रबन्ध या अनुकूलतम पूँजीकरण की स्थिति रहती है।

fu"d"k

उपर्युक्त बिन्दुओं के अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि रोकड़ प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसके बिना किसी भी बैंक या संस्था का संचालन नहीं किया जा सकता क्योंकि रोकड़ प्रबन्ध बैंकों या व्यवसायों के लिये उतना ही महत्व रखता है जितना कि मानव शरीर में रक्त का, जिस प्रकार मनुष्य के शरीर

को रक्त के उचित प्रवाह से स्वस्थ एवं कार्यशील रखा जा सकता है उसी प्रकार उचित रोकड़ प्रबन्ध से किसी भी बैंक या संस्था का ठीक प्रकार से संचालन किया जा सकता है। रोकड़ प्रबन्ध के लिये किसी भी बैंक या संस्था का वित्तीय प्रबन्धक विशेष भूमिका रखता है। अतः यह कहा जा सकता है कि बैंक ऑफ इण्डिया का रोकड़ प्रबन्ध एक शक्तिशाली मानव की भॉति अपने स्वस्थ जीवन की तरह उच्चतम प्रगति पर है। इसलिये यह संस्था बहुत उच्च शिखर की चोटी का स्पर्श कर रही है जो कि एक सफल संस्था का उद्देश्य होता है। बैंक ऑफ इण्डिया का मुख्य कार्य जमा प्राप्त करना एवं जमा राशि ग्राहकों को ऋण के रूप में प्रदान करना। बैंकों द्वारा रोकड़ का आवश्यकतानुसार संग्रहण एवं वितरण करना अति आवश्यक है। बैंक को चाहिये कि अपना खाता एक स्थान पर एक ही खोलना चाहिये ताकि विभिन्न बैंकों में छोटे–छोटे खातों में अनावश्यक रोकड़ न फॅसे। बैंक ऑफ इण्डिया की जमा व भुगतान की प्रणाली अन्य बैंकों की अपेक्षा काफी सरल एवं विश्वसनीय है। बैंक ऑफ इण्डिया ने अपनी संस्थायें भारत में अनेक शहरों में जगह–जगह पर खोल रखी हैं जिससे ग्राहकों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता है। अपर्याप्त रोकड़ का प्रबन्ध बैंक के लिये हानि का सूचक होता है। बैंक के सफल संचालन के लिये नकदी की मात्रा का पूर्वानुमान लगाना आवश्यक होता है।

lUnHk xUFk lph

- ❖ वित्तीय प्रबन्ध, डा. नवीन अग्रवाल, डा. विपिन महरोत्रा, जवाहर पब्लिकेशन, आगरा।
- ❖ वित्तीय प्रबन्ध, डा. आदर्श मोहन राठी, एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा।
- ❖ वित्तीय प्रबन्ध, डा. एस0पी0गुप्ता, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
- ❖ प्रबन्धकीय लेखाविधि, डा. जितेन्द्र सोनार, एस.बी.पी.डी. पब्लिकेशन्स, आगरा।
- ❖ प्रबन्धकीय लेखाविधि, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
- ❖ मुद्रा एवं बैंकिंग, टी.टी.सेठी
- ❖ इकानोमिक टाइम्स ऑफ इण्डिया
- ❖ रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के बुलेटिन
- ❖ दैनिक हिन्दुस्तान
- ❖ बैंक ऑफ इण्डिया के प्रकाशन

♦❒♦